Ⓙ जून 2018

हमारे ईश्वर और पिता की दृष्टी में
शुद्ध और निर्मल धर्माचरण यह है:

विपत्ति में पड़े हुए अनाथों और विधवाओं की सहायता करना

और अपने को संसार के दूषण से बचाए रखना | (याकूब 1:27)

पवित्र पाठ : याकूब 2:1-9

विचार

असीसी के संत फ्रांसिस के जीवन से एक सुन्दर कहानी है- उनके एक कोढ़ी से भेंट की| एक दिन फ्रांसिस अपने घोड़े पर सवार होकर असीसी कसबे के बाहर घूम रहे थे जब उनकी नज़र सड़क किनारे बैठे हुए एक कोढ़ी पर पड़ी | झट से वे अत्यंत घृणा के स्वाभाविक भाव से भर गए और आगे बढ़ गए | परन्तु आगे बढ़ कर वे रुक गए और उन्होंने ख्रीस्त के प्रेम के प्रति अपनी प्रतिबद्धता पर विचार करते हुए महसूस किया कि उन्हें अपने विकर्षण और डर को दूर करना होगा जो अपने भाई से उन्हें दूर करती है | वे अपने घोड़े पर से उतर गए और उस कोढ़ी के पास गए | न केवल उन्होंने कोढ़ी को एक सिक्का दिया, परन्तु उसे चूमा भी | अपने घोड़े पर लौटकर उन्होंने पीछे मुड़कर देखा, उस कोढ़ी को वहाँ नहीं पाकर उन्हें यह पता चल गया कि वह कोढ़ी येसु था |

जब हम आज के अपने संसार को देखते हैं तब हमारा ध्यान लोगों के जीवन की परिस्थितियों और उनके अवसरों के बीच के विराट असमानताओं पर पड़ता है | गरीब और बेघर लोगों को धनी और शिक्षित लोगों के पड़ोस से हटाकर शहरों की मैली कुचैली गलियों और गन्दी बस्तियों में धकेल दिया जाता है | सड़क किनारे सो रहे बेघरों को भगा दिया जाता है | निर्धन परिवारों पर दबाव डाला जाता है कि वे शहर के आलिशान और धनी क्षेत्रों से हट जाएँ ताकि ज़मीन और मकानों की कीमतों में गिरावट न हो | कुछ क्षेत्रों में भीख मांगने पर पाबन्दी है, जिससे गरीब वहाँ जाने की सोच भी नहीं सकते | सामाजिक तौर पर हम गरीब और असहाय लोगों को असुविधाजनक मानते हैं, और धनियों के साथ बहुत अच्छा बर्ताव रखते है | हम कीमती वस्त्र पहने व्यक्ति का विशेष ध्यान रख कर उससे कहते हैं, "आप यहाँ इस आसन पर विराजिए", और कंगाल से कहते हैं, "तुम वहाँ खड़े रहो" (याकूब 2:3)| दरिद्रों और अपने बीच दीवार खींच कर हम अपने जीवन को आभासीय रूप से आसान और कम कष्टदायक बनाते हैं | कई जगह, औसतन धनी व्यक्ति - उदाहरण के लिए कोई कर्मचारी - तो गरीब को देख भी नहीं पाते, उससे बात करना तो दूर की बात | दूसरी परिस्तिथियों में, लोग गरीबों को अनदेखा करके आगे बढ़ जाते हैं जैसे कि उनका अस्तित्व ही न हो | इस दौरान, गरीब बस्तियों में दरिद्रों को बिना उचित व्यवस्थाओं, स्वच्छ जल-वायु, शिक्षा, सुन्दरता देखने के अवसर (जैसे सुन्दर उद्यान, फव्वारे, कला आदि) या सही उदाहरण देने वाले लोगों के बिना रहना पड़ता है | अपने ऊँचे समाज रुपी घोड़े पर बैठे और अपनी लक्ष्य की ओर तेज़ी से बढ़ते हुए, बहुत आसान होता है कि हम गरीबों को बिना देखे दुनिया की ओर तेज़ रफ़्तार से बढ़ते चले जाएँ |

ये दरिद्र कौन हैं जो मेरे आस-पास हैं? वो कौनसी दीवारें हैं जो मुझे उनसे दूर रखतीं है? और ख्रीस्त का प्रेम मुझे उनके प्रति क्या करने की प्रेरणा देता है? "हमारे ईश्वर और पिता की दृष्टी में शुद्ध और निर्मल धर्माचरण यही है - विपत्ति में पड़े हुए अनाथों और विधवाओं की सहायता करना ...|" यह काफी नहीं है कि हम रुक कर किसी ज़रूरतमंद का हमारे पास आने की प्रतीक्षा करें | अपितु परोपकार तो यही है कि हम दरिद्रों के दुःख और ज़रूरतों को पहचाने और "उनकी पीड़ा में उनके पास जाएँ" | हमे अपनी आस पास की आरामदायक दीवारें तोडनी होंगी |

न केवल संत फ्रांसिस ने कोढ़ी को एक सिक्का दिया, परन्तु उसे चूमा भी | कुछ साल पहले, संत पापा फ्रांसिस ने हमे चुनौती देते हुए एक सवाल पुछा था, "दान देते समय क्या आप उस व्यक्ति का हाथ छुते हैं, या दूर से ही सिक्का उछालकर देते हैं ?" दरिद्रों की सेवा केवल पैसे या खाना दान देना ही नहीं है, परन्तु ख्रीस्त का प्रेम हमें प्रेरणा देना चाहिए कि हम ज़रूरत में पड़े अपने भाइयों और बहनों के पास जाएँ, उन्हें प्यार करें और प्यार से उनके ज़रूरतों की पूर्ती करें |

आइये हम अपने सम्मुख ख्रीस्त का ही उदाहरण रखें | जब उन्होंने हमें पाप की दुर्गति में देखा तब उन्होंने दूर से ही सिक्का उछालकर नहीं फैंका | परन्तु वे हमारी ज़रुरत में हमारे पास आए | वे अपनी दिव्या महिमा से नीचे उतरे ताकि वे हमारी ही तरह एक कमज़ोर मानव बन सकें | आइये हम भी, उनकी कृपाओं पर भरोसा रखते हुए, प्रभु येसु को अनुमति दें कि वे हमें ज़रुरतमंदों और कष्ट में पड़े लोगों का साथ देने के लिए उनके पास ले जाएँ | इस प्रकार, सच्चे रूप से हम अपने धर्म को निभा पाएँगे और "ईश्वर के सम्मुख स्वयं को संसार के दूषण से बचा पाएँगे" |

संतों के मुख से

"कोढियों की संगति ही नहीं बल्कि उनकी दूर से एक झलक भी संत फ्रांसिस को विमुख और अप्रसन्न कर देती थी, परन्तु तब भी वे क्रूसित ख्रीस्त के लिए... कोढियों के निवास स्थानों पर जाते, उनको दान देते और गहरे करुणा के भाव के साथ उनके हाथ और मुख चूमते..."

- संत बोनावेनचर

करने हेतु

क्रूसित ख्रीस्त की खातिर, अपनी JY साथियों के साथ इस महीने के विचार से प्रेरित होकर व्यावहारिक रूप से कुछ कदम उठाएँ |